संघर्ष ही जीवन ळे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन में संघर्ष चलता रहता है। कभी हमें सुख मिलता है कभी दुःख, कभी तिरस्कार मिलता है कभी सम्मान, इसी प्रकार जीवन की नाव अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में आगे बढ़ती रहती है। सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय जीवन में आने वाले पड़ाव हैं। जीवन में अनेक बदलाव आते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सदैव सुखी रहें या कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सदैव दुःखी रहें। सुख और दुःख रथ के पहिए की तरह जीवन में आते जाते रहते हैं। इन विषम परिस्थितियों में सम रहने का प्रयास करना चाहिए। सुख में अधिक सुखी और दुःख में अधिक दुःखी नहीं होना चाहिए। संघर्ष जीवन को निखारने के लिए है। इसलिए पूरी ताकत से जीवन के संघर्ष को जीतकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। प्रतिकूलता को जीतकर जो आगे बढ़ता है उसका जीवन कुन्दन की तरह निखर आता है। यदि जीवन में संघर्ष न आवे तो जीने का मतलब ही क्या है। विषम परिस्थितियां मानव को जीने का रास्ता दिखलाती है।

प्रकृति के नियम के अनुसार जन्म के साथ मृत्यु निश्चित हो जाती है। जहां संयोग है वहां वियोग है। संयोग के साथ वियोग निश्चित है। जब हम यात्रा करते हैं तो समीप में बैठे हुए यात्री से हमारा संबंध हो जाना स्वाभाविक है। समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से सम्पर्क और सम्बन्ध हो जाता है। किन्तु जिसको जहां जाना है स्टेशन आते ही वह गाड़ी से उतरकर चला जाता है। प्रत्येक प्राणी के आने जाने का क्रम निश्चित है। इसी प्रकार संसार में सभी प्राणी अपने कर्मों का फल भोगने के लिए आते है और नये कर्मों का अर्जन करते हैं और आयुष्य कर्म के पूरा हो जाने पर संसार से विदा हो जाते है।

यह संसार एक रंगमंच है। नाटक के पात्रों की तरह प्रत्येक प्राणी अपना–अपना अभिनय करता है और अभिनय करके विदा हो जाता है। इस जीवन को जीने का तरीका अनेक हो

सकता है, किन्तु जीवन सभी को जीना पड़ता है। एक व्यक्ति बगीचे में गया। वहां अनेक फूलों का पौधा है। कौन पुष्प वह चयन करे ये कठिनाई वहां आ जाती है। इतने सारे फूलों को देखकर अनेक विकल्प मन में आने लगते है। इसी प्रकार जैसा हमने कर्म बीज बोया है वैसा ही परिणाम हमारे सामने आता है।

जीवन निर्माण के लिए अनेक क्षेत्र हैं। विद्यार्थी को जिस क्षेत्र में जाना होता है उस क्षेत्र का चुनाव करके उसी के अनुरूप अध्ययन करता है। अध्ययन के विषयों को चुनता है और दृढ़संकल्प करके लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। किस दिशा में आगे बढ़ना है इसका चयन शक्ति के अनुसार सभी को करना पड़ता है। जब हम कहीं भोजन करने के लिए जाते हैं तो रुचिकर भोजन आने पर हम तुरन्त ग्रहण कर लेते हैं और अगर रुचिकर नहीं है तो छोड़ देते हैं। परीक्षण स्वयं का होना चाहिए, किन्तु विचार सभी से लेना चाहिए। रास्ते का चुनाव तो स्वयं करना पड़ता है। दृष्टि का चुनाव गुण और अवगुण के आधार पर करना पड़ता है।

लक्ष्य का निर्धारण करने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं– ज्ञेय, हेय और उपादेय। ज्ञेय का अर्थ है– जानना। हमें जहां कही से भी अच्छी बातें मिले उसे विनम्रता पूर्वक ग्रहण कर लेना चाहिए। हेय का तात्पर्य है– बुराईयों का त्याग। उपादेय का अर्थ है– जीवन के लिए उपयोगी और समाज के लिए उपयोगी जो हमारे कर्त्तव्य हैं उनका हम सच्चाई से पालन करें। ऐसा करने से समाज का विकास होता है। प्रेम एक ऐसा रसायन है जो समाज के हर व्यक्ति को एक सूत्र में बांधकर रखता है। समाज और राष्ट्र की एकता इसी सूत्र से बंधी हुई है। बहुत से शास्त्रों का अध्ययन कर लेने के बाद भी यदि दृष्टि में परिवर्तन नहीं आया, उसके भाव को जीवन में नहीं उतारा गया तो ऐसा ज्ञान निरर्थक होता है। इससे अच्छा तो ढ़ाई अक्षरवाला प्रेम शब्द है जो कि जीवन में सदैव समरसता को बनाये रखता है और पूरे समाज को जोड़कर रखता है।

मानव को जीवन में पुण्यकारी प्रवत्तियां करके जीवन यापन करना चाहिए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की भावना से पुण्यकारी प्रवृत्तियां करना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन के उत्कर्ष को निरन्तर गतिशील बनाये रखने के लिए व्रत, नियम आदि के पालन और

मर्यादा से अपने आचार को संवारना आवश्यक है। हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह से निवृत्त होकर जीवन यापन करना चाहिए। इस प्रकार हिंसा आदि पांच पापों के दोषों को जानकर आत्मोत्कर्ष के उद्देश्य से इनका त्याग या इनसे विरति की प्रतिज्ञा लेकर पुनः कभी उनका सेवन नहीं करना चाहिए।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ये जब मर्यादित रूप से ग्रहण किये जाते हैं, तब जीवन की दृष्टि में परिवर्तन आता है। वह पूर्ण आत्मबल के साथ पूर्ण चारित्र के पथ पर अग्रसर होता है। अहिंसा का पालन करने से पुण्य और हिंसा करने से पाप प्राप्त होता है। अनेकात्मक दृष्टि समन्वयवादी दृष्टि होती है। भारत में इस दृष्टि की महत्ती आवश्यकता है। सामाजिक संरचना का सुधारने और समरसता कायम करने के लिए जीवन में अनेकात्मक दृष्टि का पालन करना आवश्यक है। इस दृष्टि से मत भिन्न हो सकता है, किन्तु मन भिन्न नहीं होता। अनेकता में एकता को खोजना भारतीय दृष्टि है।